

शिशु सुनिर्माण के सूत्र

(1)

जगमग जगमग दिया जलाओ,  
तेरे मंदिर में देख अंधेरा,  
लौट न जाये प्रभु तेरा,  
दिया जलाओ प्रभु मनाओ।

शिशु आगमन पूर्व उसके आगमन की तैयारी करो। गर्भाधान संस्कार शिशु आगमन पूर्व उसकी तैयारी है। सुसंस्कारित आत्मा सुसंस्कारित गर्भ में बृहत् नियमों के अनुरूप अवतरित होती है। गृहस्त धर्म के समावर्तित पति पत्नि मिलकर गर्भाधान संस्कार कर दिया जलायें प्रभु मनाएं।

(2)

खेत, बीज, पर्यावरण उत्तम होने से अन्न उत्तम होते हैं। इसी प्रकार वेदज्ञ (शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक, समुचित) स्त्री पुरुषों और यज्ञीय पर्यावरण से संतान भी उत्तम होते हैं। संस्कार शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक, पर्यावरणीय समुन्नति की श्रेष्ठतम उपलब्ध विधि है। शिशु का संस्कार मय विकास करें।

(3)

गर्भाधान के समय स्त्री की उम्र कम से कम अठारह वर्ष और पुरुष की कम से कम सत्ताइस वर्ष अवश्य हो। यह उम्र रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, रज या वीर्य परिपक्वता की है। इससे पूर्व (वर्तमान युग में) गर्भाधान से संतान दुर्बल शरीर इन्द्रिय होती है।

(4)

गर्भाधान पूर्व पति पत्नि "सफल जीवन साथी होने के सूत्रों" के अनुरूप गृहस्थ-दम्पति जीवन जिएं। आपस में सामंजस्य स्थिति प्राप्त करें।

(5)

वर्तमान के विज्ञान के प्रयोग बताते हैं कि गर्भस्थ शिशु की माता गर्भकाल में जो संगीत धुन सुनती है कालांतर में जन्म पश्चात वह धुन शिशु पहचानता है। धुन 'शब्द' है। यह शिशु पर संस्कारित होती है स्पष्ट है कि गर्भस्थ शिशु पर शब्द के समान रूप, गंध, स्पर्श, रस भी संस्कारित होते हैं। माता पिता घर को इस तथ्य का खान पान रहन सहन में पूरा ध्यान रखना चाहिए।

(6)

उपरोक्त विज्ञान अनुरूप दो माह से तीन माह तक गर्भस्थ शिशु का माता-पिता के माध्यम से पुंसवन संस्कार चौथे तथा छठवें या आठवें माह में सीमन्तोन्नयन संस्कार करना शिशु निर्माण की नींव है।

(7)

शिशु जन्म समय अस्पताल से परिशुद्ध गृह बेहतर है। जन्म पूर्व माता के बदन पर मौसमानुसार ऊष्म, सामान्य जल से मार्जन करते हुए समप्रकंपन भाव उत्पन्न करने चाहिए। सुदक्ष दायी अथवा नर्स अथवा डाक्टर द्वारा प्रसव पश्चात सावधानी पूर्वक उनके ही द्वारा शिशु तन स्वच्छीकरण करना चाहिए। कक्ष वायु यज्ञ वायु द्वारा विस्थापित हो।

पिता द्वारा जातकर्म संस्कार किया जाए। इस संस्कार द्वारा "विश्वे देवाः" जागृत किए जाते हैं। उसकी जीभ पर स्वर्णशलाकों द्वारा शहद और घृत की बराबर मात्रा की स्याही से 'ओ३म' लिख तथा कानों

को "वेदोसीति" तथा अन्य आयतों/मंत्रों से आल्पवित कर उसके देवताओं का बाह्य देवताओं से सुसंपर्क पिता कराता है।

(8)

जातकर्म संस्कार पश्चात दस दिवस तक प्रातः सायं यज्ञ करें। दस दिवस पश्चात विद्वानों द्वारा आप्त वचनोमय आशीर्वचन हो। पूरी प्रक्रिया में वेद मंत्रों का सार्थ ही पाठ करें या उन्हे कहें। जिस प्रकार गर्भस्थ शिशु को संगीत धुन याद रहती है उसी प्रकार मंत्र भाव लय का भी जन्मे शिशु पर एक प्रभाव रहता है। यह प्रभाव ताउम्र रहता है।

(9)

स्मरण रखें संस्कार जीवन की आत्मा है। संस्कार शरीर और आत्मा के सुसंस्कृत करने के साथ साथ स्वस्थ सामाजिकता का भी दाता है। संस्कारित माता पिता और शिशु कभी भी अस्तित्व पहचान संकट से ग्रस्त नहीं हो सकते। अस्तित्व पहचान संकट का अर्थ है विभिन्न अवसरों पर अपनी भूमिका का अनुपयुक्त निर्वाह।

(10)

संस्कार जो शिशु हेतु किए जाते हैं वे परिवार के अन्य सदस्यों का भी परिष्कार करते हैं तथा उनमें व्यवहार कुशलता, आयोजन क्षमता, आपसी सामंजस्य एवं कार्य समूह भावना का विकास करते हैं। संस्कार सुसमाज के निर्माण में भी सहायक होते हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है कि सत्संग सामाजिक व्यक्ति एकाकी व्यक्तियों से कहीं कम बीमार पड़ते हैं। स्वस्थ सुसंस्कृत शिशु परिवार समाज विकास का आधार है संस्कार।

(11)

संस्कार ऐरे गैरे नत्थू खैरे, लूटू खसोटू लालच भरे पुराहित या संस्थान से न करायें। अगड़म बगड़म संस्कृत/ आयत आदि अगड़म बगड़म विधि जो मूर्खजनों ने प्रजातंत्री भाव के कारण विकसित कर ली हो से संस्कार कराना अस्वस्थता, असंस्कृति का पनपाना है। संस्कार के नाम पर "संस्कार मजाक" से बचें। "संस्कार मजाकुओं" से सावधान। यदि सही संस्थान या सही पंडित न मिले तो स्वयं ही संस्कार विधि के अनुरूप मंत्रो आदि का अर्थपूर्वक पाठ करते सुहृद जनों के साथ संस्कार कर लें। संस्कार अवश्य करें।

(12)

संस्कार का एक अंश है सत्संग। सत्संग कई सद्गुणों का दाता है।

"मति कीरति, गति, भूति भलाई जब जेहि जतन जंहा जेहि पाई।

सो मानव सत्संग प्रभाऊ, लोकंहु वेद न आन उपाऊ।"

बुद्धि, यश, सद्गति कर्म, विभूति-विशिष्ट अस्तित्व और लाभ ही लाभ ये सब सत्संग से प्राप्त होते हैं, वेदों और लाकोक्तियों का इसे समर्थन है।

(13)

सत्कार का एक अन्य अंश अभिवादन है जो आगमन और गमन के समय किया जाता है। अभिवादन में घर एवं शिशु को सकारात्मक लाभ दिलाता है। सत्संग में उम्रवृद्ध, अनुभव वृद्ध और ज्ञानवृद्ध भी आते हैं। इनको अभिवादन करने से प्राप्त इनकी शुभाकांक्षा (गुड विल) से परिवार तथा शिशु की 1) आयु, 2) विद्या, 3) कीर्ति, 4) शक्ति इन चारों में निश्चितः वृद्धि होती है। शुभाकांक्षा वह व्यावहारिक लाभ शक्ति है जो चारों दिशाओं में लाभ भाव फैला देती है।

(14)

संस्कार का अर्थ है भूषण भूत सम्यकीकरण करना अर्थात् व्यक्ति को गुणों का साक्षात् स्वरूप बनाते हुए उच्च स्तर पर सम स्थापित करना। संस्कार में माता-पिता, आचार्य, अतिथि, देव के पांचों आदर्श रूप (रोल माडल) – व्यवहार में शिशु देखता है और सीखता है। शिशु संस्कार का केन्द्रीय आधार होने के कारण स्वाभिमान भाव भी सीखता है। सोलह में से बारह संस्कार युवा-अवस्था में ही करने की योजना इसलिए है कि यह अवस्था जीवन में पछहत्तर पतिशत महत्वपूर्ण है।

(15)

शिशु को चार माह तक (कम से कम) माता के दुग्धाहार पर ही रखा जाए। अपवाद स्वरूप माता अस्वस्थता या दुग्ध न होने मात्र की स्थितियों में ही वाह्य दुग्धाहार का सहारा इस उम्र में लिया जाए। आहार का समय नियोजन माता तथा शिशु उन्नति के लिए आवश्यक है। रात्रि दस बजे से विपरीत (सायं की तरफ) क्रम में तीन से पांच घंटे कम करते समय तय करना बेहतर है। शिशु स्वास्थ्य, आवश्यकता, भूख क्षमता देखते तीन से पांच घंटे में से कोई अंतराल उम्मानुसार भी परिवर्तित चुना जा सकता है।

(16)

इसी उम्र से ही माता पिता भाई बहन आदि परिवार सदस्य शिशु को बोलना सिखायें उसे मुंह खोल खोल कर एक एक अक्षर स्पष्ट साफ साफ बोल बोल करके बोलना सिखायें याद रखें वाक्य देवताओं का जागरण व्यक्तित्व निर्माण बुद्धिमत्ता का आधार है अस्त व्यस्त अक्षर ज्ञान प्राप्त बच्चे अपने व्यक्तित्व को जीवन में अस्त व्यस्त ही पाते हैं। शिशु निर्माण का आधार है वैज्ञानिक तरीके से अक्षर शब्द का क्रमशः ज्ञान शिशु को देना।

(17)

अक्षर शब्द ज्ञान का अगला चरण है अंग परिचय : इस समय तक शिशु ओम, अल्लाह या अगाओ या यहोबा आदि शब्द सीख चुका होता है। परमात्मा नाम के साथ दो बार अंग का नाम लेकर अंग परिचय कराना सर्वोत्तम तरीका है। परमात्मा के नाम के साथ वाक् वाक्, प्राणः प्राणः, चक्षु चक्षु, श्रोत्रम् श्रोत्रम्, नाभिः, हृदयम्, कण्ठः, शिरः, बाहु बाहु, करतल करपृष्ठ और इन सब में यश बल की भावना सिखाएं। अंग परिचय कराना शिशु के जीवन निर्माण का आधार प्रशिक्षण है।

अक्षर ज्ञान में माता का दायित्व सबसे बड़ा है। माता वर्ण का स्थान, प्रयत्न दोनों समझते शब्दों का उच्चारण सिखाएं जैसे 'प' ओष्ठ स्थानी स्पृष्ट प्रयत्न है इस प्रकार सिखाएं तथा साथ ही ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत अक्षर के साथ साथ मधुर गम्भीर, सुन्दर, स्वर अक्षर मात्रा पद, वाक्य, वाक्य समूह, समापन आदि अदि संयत रूप से बोल बोल कर सिखाएं। यहां पर नहीं सोचना चाहिए कि बच्चा है यह क्या समझेगा इससे क्या होता है?

पांच वर्ष तक उपरोक्त के साथ साथ सरल उदात्त वाक्य भी सिखाते जाना। इसी बीच उसे नमस्ते, स्वस्ति, स्वस्ति, आइए, आप बैठिए, आप का स्वागत है, दुबारा आइए, करीबू (स्वागत) जै जै, क्षमा कीजिए, धन्यवाद जैसे शब्द तथा काका, काकी, चाचा, चाची, मामा मामी, दादा दीदी नाना नानी आदि सम्बोधन प्रयोग सुव्यवस्थित तरीके से धीरे-धीरे सिखाएं। शिशु को बड़े बुजुर्गों से व्यवहार करना भी सिखाएं जिससे वह कहीं अभद्र व्यवहार न कर बैठें तथा हर कहीं परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ाएं। स्मरण रखें शिशु माता-पिता एवं परिवार जनों का दर्पण हुआ करता है।

(18)

घर शिशु की महानतम पाठशाला और प्रशिक्षण शाला है। माता महानतम गुरु है शिशु निर्माण में पिता माता

रूपी गुरु का सहयोगी उपगुरु है। बीज शिशु के अंकुरण का प्रथम गर्भ घर है। घर के सदस्य शिशु को निकटतम रखते उसका अधिकतम हित सम्पादन करें। घर का हर सदस्य माता के समान शिशु के लिए पुरोहितम् (निकटतम्) सुरक्षिततम् रखते अधिकतम हित करने वाला बने। पुरोहितम् घर से शिक्षण प्राप्त बच्चे सम्प्रान्त, सुशील, सुशिक्षित समाज सदस्य बनते हैं।

(19)

मैं जबलपुर नर्मदा रोड़ स्थित गायकवाड कुटीर गया तब मैं बीस-इक्कीस वर्ष का था। परिवार सदस्यों से मिलने पश्चात् वहीं खड़े दो छोटे तीन चार वर्षीय बच्चे में से एक से मैंने पूछा बेटे तुम्हारा नाम क्या है? बच्चे ने कोमल स्वर नाम बताया। पर यहीं परिवार के सदस्य ने मुझे सुधारा- भाई साहब हमारे यहां सब बच्चों को भी 'आप' कहकर पुकारते हैं। उस परिवार के अनेक सदस्यों से मेरा बार बार का सामूहिक एवं व्यक्तिगत भी परिचय रहा है- परिवार की मिलनसारिता, सामंजस्य, सहयोग भावना तथा हंसमुखता अनुकरणीय है।

(20)

एक बार मैं भारत विख्यात अति धनिक परिवार के घर गया मेरा जहां जाना पूर्ण तय था। वेशभूषा सज्जित चौकीदारों, बैरों का घर था वह। घर-पुत्र मेरा कालेज मित्र था। शानदार ए.सी. बैठक में और शानदार गिलास ट्रे में शानदार तुरेदार बैरा स्वच्छ शीतल जल लाया। मैंने आते ही सूचना भिजवा दी थी। मैं अति विद्या धनिक (उस समय सर्वाधिक विद्या धनिक) था यह उस परिवार को ज्ञात था। पंद्रह मिनट कोई न आया। मैं छोटी धन्यवाद पर्ची छोड़ लौट आया। परिवार ने मुझसे पुनः संपर्क भी नहीं किया।

(21)

मैं ए.सी. प्रथम में सफर कर रहा हूं। अति धनिक परिवार कालेज मित्र की पत्नी, बच्चे, मां भी उसी डब्बे में हैं। भाभी अति सौम्य हंसमुख सुशील है। भोजन खाद्य से हुआ परिचय धीरे धीरे बढ़ा। भाभी ने बच्चों से कहा चाचा जी को नमस्ते करो। चाचा जी और बच्चों के चेहरे वितृष्णा आई एक ने कहा- ऐं दूसरे ने कहा- बे। वह ऐ बे नमस्ते मैं उम्र भर नहीं भूलूंगा। अचानक कुछ गिरने से मां के पैर में काफी चोट लग गई। मैं गार्ड के डब्बे से ड्रेसिंग सामान लाया और मैंने पैर की ड्रेसिंग कर दी पर वे बच्चे बारह चौदह वर्षीय ऐ बे हा ही करते रहे। यह धन द्वारा की बर्बादी है।

(22)

यह सुपेला हैं। गंदे नाले के किनारे एक झोपड़िया (एक ही कमरे का) घर है। हंसमुख मां, सौम्य पिता पर अति निर्धन इसमें रहते हैं। साथ रहते हैं दो बच्चे। मैं पहली बार झोपड़ी गया बच्चों ने स्वतः हाथ जोड़ नमस्ते की। परिवार से बच्चों के खेल के माध्यम से मेरा परिचय है। पिता गलियों में घूम घूम बढ़ाई काम करते हैं। बच्चे अपनी परीक्षा के दिनों में भी उनके साथ काम करते हैं। एक लालटेन में दोनों भाई पढ़ते हैं। मेरे घर भी कई बार उन्होंने बढ़ाई काम किया है। पिता बेटों में अद्भुत (वैदिक) अनुव्रत सामंजस्य है। कभी कोई काय सम्बन्धी चिकचिक न उनके साथ न उनमें आपस में हुई। मां भी कर्तव्यनिष्ठ है। परिवार संगच्छध्वं संवदध्वम् है।

(23)

अति समृद्ध परिवार है यह। होम्योपैथिक दवाखाना (धर्मार्थ) हेतु प्राप्त बड़े दान के कारण परिवार मुखिया की दवाखाने की प्रगति रिपोर्ट देने उनके घर मैं गया। तुरेदार बैरे ने बैठक बैठाया। चमचमाती माडर्न ट्रे में पानी लाया। अंदर से मां बेटों की लड़ने की आवाज आई। बैरे ने बताया कि साहब बाहर गए हैं। पूछें तो क्या कहना है? बैरे के कपड़े मेरे कपड़ों से ज्यादा क्रीस्ड थे। घर सिलवटों भरा था। मैंने बैरे

से कागज मंगवाया। वह ट्रे में एक पैड एक पेन लाया। दवाखाने की प्रगति लिखते लिखते मैंने पैड के ऊपर नामादि देखा। पैड का कागज लंदन आयातित सन बांड था, खरखराता क्रीस्ट था। पेन उस पर फिसल फिसल रहा था। लिखकर मैंने पैड लौटाते कहा इसमें से एक लेअर हैड मैं रख सकता हूँ। बैरा समझ गया हंसते हंसते बोला एक नहीं साहब चार चार ले जाइये और उसने चार लेटर हैड दे दिए। मैं आफिस में उसे ले गया। भोजन अवकाश मेरे मित्रों ने एक देखा बस छीना झपटी मची.. सबने देखा. कमरा एक ठहाका हो गया। लेटर हैड पर बाईं ओर स्वर्णिम तिरछे अक्षरों में धारक का धनिक पुत्र का नाम था और दाहिनी ओर शिक्षा उपाधि की जगह लिखा हुआ था फिल्म स्टार .....कुमार का प्रशंसक (एडमायर ऑफ फिल्म स्टार .....कुमार)।

(24)

क्रम संख्या (19) तथा (22) में वर्णित परिवार आज (तीस साल बाद) सर्व वृद्धि प्राप्त है। गायकवाड परिवार के सदय आज भी एक जुट धर्म सम्मेलनों में हंसते हंसते आनंदपूर्वक मिलते हैं। मन प्रसन्न हो जाता है। बढई परिवार मेरे परिचय में निर्धन बस्ती से उठकर धनिक बस्ती में आया द्वितीय परिवार है। दोनों भाई स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त हैं। भिलाई इस्पात संयन्त्र में नौकरी (अच्छे पद पर) करते हैं। विवाहित हैं, पत्नियां उनकी नर्स एवं शिक्षिका हैं। पैतृक पूर्व परिवार का अनुव्रतपन उनके जीवन को आनन्द समृद्धि देन है।

(25)

क्रम संख्या (20), (21), (23) परिवारों में ऐ बे बच्चे दसवीं से आगे लाख प्रयास नहीं पढ़ पाए। परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा ग्रहण ग्रस्त है धन अपशेष बेशक बाकी है। सन ब्रांड परिवार में बैरे खिसक लिए हैं। कभी जिस घर उत्तम भोज हुआ करता था आज हवन चूरमा होता है दीवारों में प्लास्टर उखड़ गए हैं। घर रो रहा है।

घर और शिशु— संस्कार और परिवार अनुव्रतपन से ही बनते हैं। परिवार अनुव्रतपन वह महत्वपूर्ण तथ्य है जो घरों को झोपड़ी से महल में निर्धनता से समृद्धि में परिवर्तित कर देता है। व्रतहीन परिवारों की नियति बिखराव—पतन ही तय है।

(26)

चार उत्तम शिक्षक जीवन निर्माण करते हैं (1) माता, (2) पिता, (3) आचार्य, (4) अतिथि। वर्तमान युग में आचार्य चयन एक कठिन प्रक्रिया है इसके स्थान पर स्कूल चयन का प्रचलन है। अतिथि चयन की भी परम्परा समाप्त प्राय है। पर अगर माता पिता चाहें तो अतिथि चयन किया जा सकता है वर्तमान के अतिथि हमारे घनिष्ट परिचित हैं जिन्हें हम यदा कदा घर बुलाते हैं। अतिथि अप्रत्यक्षतः शिशु संस्कारित करते हैं, जो कभी कभी अति प्रभावकारी होता है। क्योंकि यह अवचेतन पर सहसा प्रभाव डालता है।

(27)

शान्ति, आरोग्यकारक, ऋतु अनुकूल, अविपरीत, बलवृद्धि कारक, सात्विक, दुग्ध, घृत, मिष्ट, फल, मेवे आदि से घर भरा पूरा हो। शुद्ध घृत में भुने आटे में गुड़ के लड्डू (पिन्नियां) सर्वोत्तम उपखाद्य है। प्रातः स्वल्पाहार में मक्खन, दही का प्रयोग हो। एक बार रायते या दही की उपसब्जी प्रयोग हो। भोजन के साथ मठा प्रयोग भी हो। माता पिता, बड़े, बच्चे, अतिथि गृह में शिशु को सामने तथा अन्यथा भी उदात्त वाक्यों का प्रयोग करते बातचीत करें। बाहर से आनेवाले अभ्यागतों के साथ में हर बार यह संभव नहीं है, पर माता, पिता आदि स्वयं इसका ध्यान रखें।

(28)

छोटे छोटे सरल उदाहरणों से बच्चे “उम्र सीख” सीखते हैं। माता पिता बच्चे के लिए आदर्श प्रारूप (रोल माडल) होते हैं। इसी कारण अपने जीवन के उदाहरण देना बच्चों पर अधिक प्रभावकारी होता है। शिशु के बचपन की अच्छाइयों को जो बच्चा प्रायः भूल जाता है उसे बार बार स्मरण कराएं। इससे वह अच्छाई प्रोत्साहन प्राप्त करता है। मुझे स्मरण है मुझमें बड़ों के प्रति इतना आदर भाव इसलिए है कि मेरे माता पिता ने मेरे बड़ों के सामने हमेशा खड़े रहने तथा खड़े हो जाने के संस्मरण कई बार सुनाए थे।

(29)

घर में व्यर्थ क्रीड़ा, असंगत रुदन, भौंडा हास्य, निरर्थ लड़ाइयां, ऊलजलूल वाक् युद्ध, अनावश्यक शोक, लोलुपता, ईर्ष्या-द्वेष, निन्दा-चुगली, जुआं, शराब बैठकें, मांसाहार पार्टियां आदि न हों। प्रयास पूर्वक माता पिता इन सबका हर स्थल निराकरण करें। एक भी गंदी मछली के संसर्ग-संपर्क से घर को बचाकर के रखें। परिवार गंदलापन द्रुत गति से शिशु मानस में ढाल पर बहते जल की तरह प्रवेश करता है।

(30)

अति कठोर भय अनुशासन भी बच्चों के मानस को कुंठित कर देता है और उनका विकास घुटकर रह जाता है। एक परिवार हमारे यहां आया। माता के साथ दो बच्चे उसमें थे। हम सब बैठे थे। बच्चे आठ और दस वर्ष के थे। उनकी घिग्घी बन्धी हुई थी। एक टक मां को देख रहे थे। बच्चों ने वहां रखे खाद्यान्न देखे और लालच भरी आंखों से बस देखते रहे.. हमारे अनुरोध पर भी उन्होंने कुछ न लिया। आंखों में भयानक भय साफ दिख रहा था। वे मां के इशारे की प्रतीक्षा में मां को टकटकी लगाकर देख रहे थे। मां ने इशारा किया बच्चों ने मशीनवत मिठाई टुकड़ा लिया। मैं गवाह खुदा गवाह मिठाई के टुकड़ों ने बच्चों को खाया।

कालांतर में उपरोक्त घर में दो कमरे एक बैठक में एक घर होते हुए तीन चूल्हे जलते थे। घर के छे लोग छे टनटनाते बर्तन थे। एक बहू ने आत्महत्या की। घर में दरिद्रता दालिन्य फूट फूट करके टपकने लगा था। घर का खाना पीना रहना सभी कुछ बेतरतीब था। इसी घर एक बेटी अर्धविक्षप्तावस्था को प्राप्त हुई।

(31)

व्यर्थ क्रीड़ा असंगत घर वाला परिवार एक बार हमारे यहां आया बच्चे मां को कुत्ती कुतिया, भाई-बहनों को साला साली एवं मां बहन की गलियां सुनाते थे। हमारा घर तथा हमारे घर का वातावरण उनके लिए उतना ही दमघोंट था जितना कि उनका घर वातावरण हमारे लिए दम घोंट था। अति कालांतर उनका सत्रह अठारह वर्षीय बालक सभा में बेझिझक शराब लेता है। अनुशासन की यह स्थिति है दो वर्षीया पोती को दूध पिलाने का प्रयास उसकी मां और नानी ‘बाबा’ (भूत) का भय दिखाकर करती है तो वह दूध उलट देती है और हंसती है। हंसते हुए कहती है बुला लो ‘बाबा’ को। वह ‘बाबा’ सच समझ गई है। ‘बाबा’ की मां नानी से भी डरती नहीं है।

(32)

वर्तमान युग विज्ञान युग है। चारों ओर विज्ञान उन्मुक्त विचरण कर रहा है। इस वातावरण में भी यदि कोई यह समझता है कि वह पत्थर पूजा, प्रतिमा देवता, वृक्ष देवता, काल्पनिक गरुण पुराणी भ्रामादि कथाओं, आदि आदि के अंध विश्वासी घटियापन से शिशु निर्माण कर सकेगा.. तो वह गलती कर रहा है। इन सबसे शिशु मानस का रक्षण कीजिए.. यह सब दोहरा हानिकर है। ये सब वर्तमान में न केवल शिशु मानस हेतु अप्रत्यक्ष जहर है अपितु कालांतर में आपको पीढ़ी अंतर दुःख (जनरेशन गॅप) से त्रस्त कर देगा। कई घर इस त्रस्तता दुःख को आज भोग रहे हैं।

(33)

“घर एक मंदिर है” —गलत धारणा है। “घर एक सिनेमाघर है” —गलत धारणा है। “घर एक बाजार है” (प्रजातंत्री मान्यता) —गलत धारणा है। “घर एक मनोरंजन क्लब है”, “घर एक दुकान है”, “घर एक कला प्रदर्शनी है”, “घर एक कार्यालय है” आदि गलत धारणाओं व्यवहारों से घर का रक्षण करना शिशु निर्माण में सहायक है। स्मरण रखिए कि “घर मात्र घर है” उसे घर ही रखिए।

(34)

(अ) परिवार आनंद मय आश्रम है, (ब) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सिद्धि स्थान है, (स) अविराम उर्ध्वगति जाती अश्वशक्ति है, (द) उमंग, उत्साह का प्रवाह, वेद प्रचार केन्द्र, श्रेष्ठ निवास, शिशु के आल्हाद का उछाह केन्द्र है, (ई) सामाजिक अनुव्रतपन है, (फ) अस्तित्व—पहचान दाता है, (य) रमणीय आश्रम, श्रेष्ठ समर्पण, स्वाहा है, (र) पंच यज्ञ, सोलह संस्कार, चार आश्रम, शत वर्ष, सर्पणशील माता पिता, पत्नी पति, भाई भाई बहिन बहिन, भाई बहिन, पुत्र—पुत्री, भृत्य आदि सदस्यों का समन, सहृदय बन्धन है और (ल), एक अग्रणी का अनुसरण करते सहयोगपूर्वक उदात्त संस्कृति का निर्माणकर्ता घर है।

(35)

दो, तीन चार वर्ष की उम्र से ही शिशु को मानवता, विद्या, श्रम, ज्ञान, धरती, परोपकार, धर्म, जीवन, आचार, व्यवहार, धन, विज्ञान, ईश्वर, समाज संबंधी, माता—पिता, आचार्य, अतिथि, राजा—प्रजा, परिवार, रिश्तेदार, सेवक, अपरिचित आदि से कैसा—कैसा व्यवहार करना सम्बन्धी मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य अर्थ सहित क्रमशः धीरे—धीरे याद करा दें। इसको याद कराने का एक सरल तरीका यह भी है कि परिवार प्रातः सायं चयनित उदात्त वाक्यों की प्रार्थना अर्थ सहित दुहराई जाए।

(36)

इसी उम्र में शिशु को धीरे—धीरे अन्धविश्वास, भयप्रद बातों यथा भूत—प्रेत, पिशाच, डाकिनी—शाकिनी आदि का निराकरण करें। मन्त्र—तन्त्र, मारण—तारण, जादू—टोना, इन्द्रजाल आदि आदि की असत्यता का पर्दाफाश करना। फलित ज्योतिष तथा ज्योतिष सम्बन्धी अन्धविश्वासों से भी शिशु को परिचित कराना आवश्यक है। यह इसलिए जरूरी है कि कच्ची उम्र में ही अंध विश्वास आदि जो मस्तिष्क में घर कर जाते हैं वे फिर उम्र भर रहते हैं।

(37)

भाग्यवाद से बचने हेतु उदात्त वाक्य जो कंठस्थ कराया जा सकता है— बड़े चलो, चलते रहो..! जो परिश्रम से थक कर चकनाचूर नहीं होता है उसे सफलता नहीं मिलती जो भाग्य के भरोसे बैठ जाता है उसका भाग्य भी बैठ जाता है। बड़े चलो, चलते रहो..! सोने वाला कलि है। करवट बदलने वाला द्वापर है। उठकर खड़ा हो जाने वाला त्रेता है। जो चल पड़ता है वह सतयुग है। बड़े चलो, चलते रहो.. सोने वाले का भाग्य सोता है। करवट लेने वाले का भाग्य करवट लेता है। उठकर खड़े हो जाने वाले का भाग्य उठकर खड़ा हो जाता है और चल पड़ने वाले का सौभाग्य चल पड़ता है। बड़े चलो, चलते रहो..!  
..!

जो मानव साहसपूर्वक चलता है वह अपने जीवन में अमृत मधुर फलों को पाता है। उसके जीवन में समृद्धि के फूल खिलते हैं। उसके पाप तथा दुःख स्वयमेव थककर सो जाते हैं। सूर्य के परिश्रम को देखे जो चलते हुए कभी नहीं थकता। तुम भी बड़े चलो, चलते रहो..!!

(38)

“अश्व पितु—मातु” बनने से बचें। “अश्व पितु मातु” वे माता पिता हैं जो टेप रिकार्ड की तरह पुनः पुनः सीमित वही रूढ़ अन्धविश्वास दुहराते रहते हैं। उत्तम की अति रूढ़िता एक दूसरी तरह की “पितु मातु



अश्वता” है। इसका भी दुष्प्रभाव होता है कि शिशु रूढ़ि भाव के कारण ऊब जाता है। नवीनीकरण अपने आप में स्फूर्ति है। अपने विचारों से शिशु को घेर मत दीजिए एक सीमा बाद वह कसमसाने लगेगा। समारोहों, सत्संगों, कविगोष्ठियों, चर्चागोष्ठियों में शिशु को ले जाया कीजिए तथा कालांतर में उसकी जिज्ञासाओं का शमन कीजिए। बीच बीच नव आलेखों पर घर में भी खुली चर्चा कीजिए।

(39)

बच्चा जब तनिक समझने लगे तो उसे उसका नाम, पिता का नाम, घर का पता टेलीफोन नंबर और गुम जाने या बिछड़ जाने की स्थिति में दोस्त के घर, पोलिस थाने, स्कूल, मंदिर जाकर मदद लेने के बारे में निश्चयात्मक ढंग से समझा दें। यदि नहीं समझता है और आप सफर आदि में उसके साथ जा रहे हैं तो उपरोक्त विवरण उसके जेब में लिखकर डाल दें। ध्यान रखें बच्चे के गुम जाने के बाद महापरेशानी होती है। मेरी बिटिया के एक बाजार में गुम जाने पर उसे मेरे द्वारा पूर्व में ही दी गई यह सलाह कि “ऐसी स्थिति पर वह जहां वाहन खड़ा किया हो वहां पहुंच जाए” काम आई थी।

(40)

इसी उम्र उसे परिचित अपरिचित का भेद तथा उनसे व्यवहार भी समझा देना आवश्यक है। इसके लिए उसके मन से भय भाव का निकालना भी जरूरी है। बच्चे को समझायें कि न रात भय करती है न दिन भय करता है, न धरती डरती है, न आकाश डरता है, न सूरज डरता है न चांद डरता है, अतः हम भी न डरें। न रात में डरें, न दिन में डरें। अपरिचित द्वारा बुरी नीयत से फुसलाने पर, उठाने पर बच्चा साहसपूर्वक यह जोर से कह सके कि तुम मेरे माता पिता नहीं हो। यह साहस—अभयता आवश्यक है।

(41)

जब शिशु स्कूल जाए तो उसे रास्ता पहले दिन स्वयं साथ जाकर समझाएं। रास्ते के नियम बताएं। कभी कभी स्कूल जाकर उसकी शिक्षिकाओं से मिलें या पैरेंट टीचर एसोसिएशन के माध्यम से स्कूल से सम्पर्क रखें। रोज शाम बच्चे के स्कूल से वापस आने पर उससे विवरण पूछें। उसके दोस्तों के बारे में रुचि दिखाएं। स्कूल तथा घर मध्य आप सेतु का कार्य करें। बच्चे के स्कूल उत्साह को बढ़ाएं। स्कूली प्रतियोगिताओं में स्वतः भाग लेने के लिए उसे प्रोत्साहित करें।

(42)

बच्चों के खेल—कूद झगड़ों को गंभीरता से न लें। ये स्वाभाविक हैं तथा स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं। आप इन्हें समाप्त करने की कोशिश में इन्हें दीर्घ कर देते हैं। एक माता—पिता ने बच्चों के झगड़ों को अति गंभीरतापूर्वक लिया परिणामतः माता पिता ही आपस में झगड़ने लगे। “खुद रूठना खुद मनना” ये बच्चों का सहज सरल स्वभाव है। उन्हें रूठने मनने का अप्राकृतिक न सिखाएं।

(43)

मस्तिष्क भोजन से उर्जा पाता है। रात्रि भोजन पश्चात् प्रातः तक भोजन उर्जा की क्रमशः की अप्राप्ति से प्रातःकाल में मस्तिष्क उर्जा भूख से त्रस्त हो याददाश्त कम हो जाती है। शिशु बालक मस्तिष्क इसे और अधिक महसूस करता है अतः भोजन का नाश्ता शाही, दिवस भोजन चाकरीय रात्रि भोज शाहिनी का नियम याद रखें। प्रातः राजा के समान नाश्ता, दिवस नौकर के समान भोजन और रात्रि में रानी के समान भोजन की व्यवस्था करें। भोजन क्षेत्र सत, रज, तम और कफ, पित्त, वात नियम भी याद रखें। विभिन्न शोधकार्य दर्शाते हैं कि प्रातः नाश्ते में ही दिवस भर के कुल खाद्य का एक चौथाई खाद्य लेने वाले बच्चों की याददाश्त सम, शब्दोच्चारण क्षमता, गणित हल करने की क्षमता, भौतिक क्षमता, रचनात्मकता, नव सूचना उपयोग आदि दिवस खाद्य का एक बटे दस (दस प्रतिशत) खाद्य लेने वालें उसी उम्र के बच्चों से बेहतर थे।



मेरे बचपन में मेरी पू. माताजी ने उपरोक्त नियम का बिना तथ्य समझे पालन कर लिया था। मैं प्रातः नाश्ते में एक तंदूरी पराठे पर पराठे के दुगनी मोटाई मक्खन उस पर चौथाई मोटाई देशी शक्कर की तह लेता था, साथ में एक गिलास लस्सी भी रहती थी। नाश्ते में शर्करा पदार्थ अवश्य हो कि ग्लूकोज कमी मस्तिष्क को अधिक प्रभावित करती है।

(44)

मैं प्रातः टहलने निकला। जुनवानी गांव के एक घर के सामने मां ने एक चार पांच वर्षीय बच्चे के कपड़े उतारे। बच्चा भागा.. मां ने उसे पकड़ा.. बच्चा रोया.. मां ने उसके सिर पानी डाला.. बच्चा और जोर से रोया.. मां ने उसे साबुन से मलमल कर नहलाया.. नये कपड़े पहनाए.. तब बच्चे को बात समझ में आई। कंधी आदि कर सुसज्जित स्वस्थ महसूस करता बच्चा गांव की गली में स्वाभिमान पूर्वक निकला। एक ग्रामीण बोला— “बाबू आज तो बाबू साहब बन गए हो..!” मैं देखकर सोचता रहा। बच्चे के लिए जो शारीरिक स्थिति है वही मानसिक, सामाजिक आध्यात्मिक अस्तित्वों की भी है। बच्चे को अन्ततः स्वाभिमान भरा स्वस्थ करने, खुश करने, उनकी विभिन्न गन्दगियां उसकी इच्छा के विरुद्ध भी दृढ़तापूर्वक दूर कीजिए।

(45)

बच्चे बड़े होते होते गलत सलत हरकतें करते रहते हैं। हंसी भी क्या चीज है मूर्खता जिसका बीज है। ऐसी हरकतों पर अज्ञानी माता पिता हंसते हैं खुश होते हैं। माता पिता को खुश होते देखकर बच्चे न केवल गलत सलत की आदत डाल लेते हैं वरन और अधिक गलत सलत करने लगते हैं। बच्चों की किसी भी नादानी पर हंसें नहीं। नादानी को उसकी आदत न बनने दें। उसकी गलत सलत करने की आदत को तत्काल सुधार दें। यदि वह गलत कार्य करे तो आप उसे उसी समय सही कार्य करके समझाएं। बच्चे नकलची बंदर होते हैं। सही की नकल करने लग जाएंगे। कालांतर में सही उनकी आदत बन जाएगा।

(46)

हमारे यहां हमारे एक रिश्तेदार का डेढ़ वर्ष का बच्चा आया। शाम को जब मैं घर आया तो पूरे घर को छोटी डिबियाओं, पेपरों, कपड़ों के टुकड़ों आदि से भरा पूरा बिखरा पाया। घर लघु सामानों का तितिर बितर फैलाव बना हुआ था। वह बच्चा डुगुर डुगुर सारे घर में चलता और सेंटर टेबल, अलमारी के निचले खाने के सारे सामानों को बिखेर देता। हमारे घर भी उसने वही किया। उसकी इस गलत सलत आदत पर मेरे परिवार सदस्य भी परेशान कम खुश अधिक थे। वे बोले— देखिये इस सिमि ने क्या बगीचा बनाया है सीमि यह सुनकर और उत्साहित होती रही। उसकी आदत यहां तक बढ़ी कि वह खाद्य पदार्थ को भी चख चख कर फेंक कर बगीचे की शोभा बढ़ाने लगी। सबने उसे आनंदपूर्वक स्वीकार लिया।

(47)

मुझे यह सहन नहीं हुआ। मैंने पेपर उठाकर सेंटर टेबल पर रख दिये। नमक दानी, काली मिर्च दानी, आलमानी में यथा स्थान रखे। आधे बिस्किट उठाकर पोंछकर सिमि के हाथ में दिये कहा इसे खा लेते हैं फेंकते नहीं हैं। सारी बिखरी चीजें मैंने बिना उससे छिपाये उसकी पहुंच सीमा के अंदर ही तरतीब से रख दी। सिमि को आश्चर्य हुआ। उसके लिये यह नई बात थी। पर थोड़ी देर बाद उसने फिर एक दो चीजें बिखराने के उद्देश्य से उठाई एकाध फेंकी भी। मैं उठा मैंने उसके हाथ से चीज लेकर यथा स्थान रखते कहा— नहीं बेटा इसे फेंकते नहीं ऐसा रखते हैं। पच्चीस तीस बार धीरे— धीरे समझाने कुछ डांटने डपटने तनिक भय दिखाने से सिमि की आदत सुधर गई। मैंने देखा कि सिमि के साथ ही साथ उसकी मां भी कुछ सीख रही है।

(48)

बढ़ते बच्चे जिज्ञासा से भरे होते हैं। उनकी जिज्ञासाओं को कभी टालें नहीं या उनका दमन न करें या उन पर खीजें नहीं वरन उनकी जिज्ञासाओं का उदाहरण पूर्वक उत्तर दें। उनकी उम्र के उपयुक्त सरल उदाहरणों द्वारा समझाई बात उम्र भर याद रहती है। जिज्ञासाओं के समुचित उत्तरों से बच्चों के ज्ञान क्षेत्र में अतिशय वृद्धि होती है तथा वह बड़ा होता है। बच्चों को जिज्ञासाओं के लिए प्रेरित करें ऐसे ही उदात्त वाक्य कहने के लिये, पुरानी सुनी कहानी दुहराने के लिए भी प्रेरित करें। मित्र मंडली परिवार मंडली में उसकी अच्छाइयों को इस तरीके से उजागर करें।

(49)

कभी कभी बच्चों को सउदाहरण कुछ समझाने पर बच्चे अपनी सहज प्रतिभा स्फुरण से चकित कर देने वाले उत्तर देकर आपको मात कर दे सकते हैं। मेरा छोटा बच्चा नमित चप्पल रगड़ रगड़ कर सड़क पर चल रहा था। मैंने उससे कहा बेटा ऐसा चलने में चप्पल बेकार घिसती है, आवाज भी होती है.. इसलिए हमेशा हल्के पांव चलना चाहिये जैसे कि बिल्ली चलती है, हमें उसके आने का पता ही नहीं चलता है। नमित ने छूटते ही कहा— पापा बिल्ली कोई चप्पल थोड़े ही पहनती है ?

(50)

बच्चे के ऐसे सहज प्रदीभाजन्य तर्कों पर आपको क्या करना चाहिए ? उत्तर है— मुग्ध हो जाना चाहिए। नमित के पापा याने मैं “बिल्ली कोई चप्पल थोड़े ही पहनती है..?” कहने पर मैं मुग्ध हो गया। मैंने कहा वाह बेटे वाह.. क्या बात कही है..! और उसके सिर हाथ फेर दिया.. आगे कहा— “पर बेटे बिल्ली के पैरों में परमात्मा ने ही गद्देदार चप्पल बनाई है.. अगर वह पैर रगड़ रगड़ कर चलेगी तो उसकी यह प्राकृतिक चप्पल घिस जाएगी।”

(51)

आज का युग प्रतियोगिताओं का युग है। दूरदर्शन पर कौन बनेगा करोड़पति, अन्ताक्षरी, कमजोर कड़ी कौन, खुल जा सिम सिम, जैसे सूचनात्मक, वाहियात, व्यावसायिक उद्देश्य से निर्मित, पर रोचक कार्यक्रमों की भरमार है। इन कार्यक्रमों का प्रतीकार आवश्यक है पर विरोध अनावश्यक है। इनका प्रतीकार स्वस्थ प्रतियोगिताओं की छोटे छोटे आयोजनों से किया जा सकता है। उदात्त वाक्य प्रतियोगिता बच्चों की इस प्रकार की रखी जा सकती है कि जो बच्चा सर्वाधिक उत्तम उदात्त वाक्य कहेगा या लिखेगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा। गीता श्लोक याद करना, सर्वधर्म सम उदात्त वाक्य याद करना, एक सांस जाप करना, या दीर्घकाल शरीर को एक ही स्थिति रखने रूप तप प्रतियोगिता जिसका स्वरूप एक पैर पर खड़े रहना हो सकता है, कागज के खिलौने बनाना, पत्तों की संख्या या लाइन की लम्बाई, या पुस्तक के पेज आदि का अन्दाज लगाना, आदि आदि अनेकानेक स्वथ प्रतियोगिताएं रखकर बच्चों को स्वस्थ प्रोत्साहित करते उसके व्यक्तित्व का सुविकास करना चाहिए।

(52)

“माता संस्कार दा”— माता, पिता, आचार्य, अतिथि इन चारों में माता पछहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण है चाहे वह भौतिकतः पच्चीस प्रतिशत भर है। माता को घर में आदर का स्थान प्राप्त हो तथा माता घर में हमेशा गरिमापूर्ण आदरणीय व्यवहार ही करे। शिशुओं पर वास्तव में माता का प्रभाव वैसे भी पिता की तुलना में कहीं अधिक पड़ता है। यह बात माता के लिए बोझ कारक नहीं अपितु आल्हादकारक होनी चाहिए कि वह शिशु निर्माण में पछहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण है। जो माताएं अनुशासन को बोझ समझती हैं, नियमों को वाहियात समझती हैं, उनके बच्चे असन्दिग्ध रूप में उद्वण्ड तथा नियमहीन होते हैं। जो माताएं बच्चों के चरित्र निर्माण में पछहत्तर प्रतिशत सहर्ष निभाने को तैयार नहीं होती हैं उनके बच्चे अनगढ़ ही रह

जाएंगे।

(53)

अपने बचपन की उसी उम्र का स्मरण करते, स्वयं उसी उम्र का होते हुए बच्चे से व्यवहार करें। बचपन में मेरा मित्र था 'भाऊ' शायद मनोहर नाम का। हम लड़ पड़े। उसने मेरी कमीज को मैंने उसकी कमीज को फाड़कर बुशशर्ट बना दिया। मैं घर पहुंचा। मां मुझ पर बरस पड़ीं। पिताजी ने मां को रोका। बचपन का नई धोती कस के बांधकर दोस्त से खिंचवाने का उदाहरण देते बताया मेरी भी धोती दो हो गई थी। फिर मुझे समझाया कि घर का नुकसान तो होता है न? मैं आज भी पिता के आगे आदर से नतमस्तक हूँ।